150th BIRTH ANNIVERSARY OF MAHATMA GANDHI

Mahatma Gandhi (2nd October, 1869 – 30th January, 1948), popularly known as Bapu, led the movement against the British rule of India. He is considered the father of the nation and is a well-known name internationally for his doctrine of nonviolent protest (satyagraha) to achieve political and social progress. Bapu's struggle culminated in India's Independence on 15th August, 1947. Bapu strived to lead the country to not just political independence but to a better India and a society free of caste, religious, economic and gender prejudices.

The occasion of 150th birth anniversary celebrations reminds the humanity of the efficacy of the message of Bapu. Bapu's lessons are relevant in every policy of the country such as Swachh Bharat, rights of women and children and of civil liberties of small and disadvantaged groups, health and well-being of the Indian farmer and the Indian villages.

Government of India decided to commemorate the 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi, Father of the Nation, at national and international level to propagate his message. A National Committee (NC) headed by Hon'ble President of India was constituted for this purpose. This Committee includes Hon'ble Vice-President, Hon'ble Prime Minister, Chief Ministers of all states of the country, representatives from across the political spectrum, Gandhians, thinkers, and eminent persons from all walks of life. An Executive Committee (EC) headed by Hon'ble Prime Minister with 19 members has also been constituted. Mandate of Executive Committee is to consider policies and lay down guidelines for the commemoration and chalk out the plan, programmes and activities under the commemoration.

Bapu's contribution to the system of nature cure in India is immense. He was a fervent practitioner of naturopathy all through his life. In 1932, Dr. Dinshaw Mehta met Bapu in Bombay (as it was then known) upon the latter's invitation. This meeting led to a lifelong association and Dr. Mehta remained Bapu's personal nature cure physician for life. Bapu founded the All India Nature Cure Foundation Trust in 1945. He believed that nature cure means a change for the better in one's outlook on life itself and regulation of one's life in accordance with the laws of health.

A healthy lifestyle envisaged by Bapu comprises harmony amongst three dimensions - the intra-personal, the inter-personal and the environmental/cosmic. *"The Earth has enough resources for our need but not for our greed."* Bapu's concern for maintaining ecological balance and environment is perhaps best captured in the preceding quote. His concern about the environment and ecological impact of urbanization was evident in his speeches and writings.

The idea of *Atma-nirbharta* or self-reliance has its origins in Bapu's concept of a self-reliant India, the foundation of his Swadeshi philosophy. Bapu emphasized the idea of self-sufficient village economy. He opined that all goods and services necessary for residents of a village should be available within the village. Bapu stressed on nurturing rural industries including handlooms and handicrafts.

Bapu was convinced that education can play an effective role in developing a wholesome human personality capable of resisting war, violence, injustice and oppression and building a social order wherein man can live in peace and harmony with others. He concentrated on an education that could draw out the best in the child—body, mind and spirit—for developing a peace loving human personality. Bapu believed that education is closely associated with the socio-economic development of the society. He advocated a scheme for basic education in which vocational training or work experience is of utmost importance.

Department of Posts is pleased to issue a Miniature Sheet and four Commemorative Postage Stamps to commemorate the 150th Birth Anniversary of Mahatma Gandhi.

Credits:

Stamp/ Miniature Sheet/FDC/ Brochure/Cancellation cachet : Sh. Sankha Samanta

महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती

महात्मा गांधी (2 अक्तूबर, 1869 – 30 जनवरी, 1948), जिन्हें 'बापू' के नाम से जाना जाता है, ने भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक राज के खिलाफ चले आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्हें भारत का राष्ट्रपिता माना जाता है तथा राजनीतिक एवं सामाजिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में शांतिपूर्ण सत्याग्रह के अपने सिद्धांत के कारण वे अंतरराष्ट्रीय पटल पर सुविख्यात हैं। बापू के संघर्ष की बदौलत भारत ने 15 अगस्त, 1947 को आजादी पाई। बापू ने न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता दिलवाने में देश का नेतृत्व किया, बल्कि इसे बेहतर बनाने के लिए वे जाति, धार्मिक, आर्थिक एवं लैंगिक भेद–भाव जैसे पूर्वाग्रहों से भी समाज को मुक्ति दिलाने की दिशा में संघर्षरत रहे।

बापू की 150वीं जयन्ती मानवता को उनके संदेश की प्रभाविता एवं महत्ता समझाती है। बापू द्वारा दी गई सीख आज हमारी प्रत्येक नीति में परिलक्षित होती है, जैसे स्वच्छ भारत, महिला एवं बाल अधिकार, अल्प एवं पिछड़े समूहों के लिए सामाजिक स्वतंत्रता, भारतीय किसानों एवं गाँवों का स्वास्थ्य एवं कल्याण।

भारत सरकार ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया है, ताकि उनके संदेश का व्यापक प्रचार–प्रसार हो सके। इस उद्देश्य से भारत के माननीय राष्ट्रपति की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय समिति (एनसी) का गठन किया गया। इस समिति में माननीय उप राष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री, देश के सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ–साथ राजनीतिक जगत के प्रतिनिधि, गांधीवादी, चिंतकों और जन–जीवन के सभी वर्गों के सुविख्यात लोगों को शामिल किया गया है। इस दिशा में माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक कार्यकारी समिति का भी गठन किया गया है, जिसमें 19 सदस्य शामिल हैं। इस कार्यकारी समिति को बापू के जयन्ती समारोह संबंधी कार्यक्रमों के लिए नीतियों एवं दिशा–निर्देश बनाने के साथ–साथ इस दिशा में उपयुक्त योजनाएं, कार्यक्रम तथा कार्यकलाप संबंधी विस्तृत कार्ययोजना बनाने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

प्राकृतिक चिकित्सा की दृष्टि से भी बापू का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे आजीवन प्राकृतिक चिकित्सा का अनुसरण करते रहे। 1932 में बापू के निमंत्रण पर डॉ. दिनशॉ मेहता ने बंबई में उनसे मुलाकात की। इस मुलाकात के बाद डॉक्टर मेहता आजीवन बापू के निजी प्राकृतिक चिकित्सक बने रहे। बापू ने 1945 में अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा प्रतिष्ठान ट्रस्ट की स्थापना की। उनका विश्वास था कि प्राकृतिक चिकित्सा की राह, जीवन को लेकर मनुष्य के दृष्टिकोण को आमूल परिवर्तित कर देती है और उसे स्वास्थ्य के नियमों के अनुरूप जीवन जीने का मार्ग दिखाती है।

बापू की परिकल्पना के अनुसार स्वस्थ जीवनशैली के अंतर्गत तीन आयामों का सामंजस्य आवश्यक है – मनुष्य का स्वयं अपने से संबंध, अंतर्वैयक्तिक संबंध तथा पर्यावरण/ ब्रह्माण्ड के स्तर पर उसका अंतर्संबंध। बापू ने कहा था, "धरती की झोली में हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं परंतु हमारे लालच को पूरा करने के लिए नहीं।" पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरण संतुलन बनाने के महत्व से जुड़ा उनका सरोकार उनकी इस उक्ति में बखूबी समाया हुआ है। शहरीकरण के परिणामस्वरूप पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी तंत्र पर पढ़ने वाले प्रभाव को लेकर उनकी चिंताएं, उनके संबोधनों तथा लेखन में स्पष्ट रूप से मुखर होती हैं।

देश की आत्मनिर्भरता की परिकल्पना का जन्म भी बापू की भारत को स्वावलंबी बनाने की अवधारणा में ही है, जो उनके स्वदेशी दर्शन का आधार है। बापू ने गांवों पर आधारित आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था पर सबसे अधिक बल दिया। उनका विचार था कि गांव के लोगों की जरूरतों का सभी सामान और सेवाएं गांवों में ही उपलब्ध होनी चाहिएं। बापू ने हथकरघा तथा हस्तशिल्प सहित सभी ग्रामीण उद्योगों को विकसित करने पर अत्यधिक बल दिया।

बापू का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा, मनुष्य के व्यक्तित्व का इस प्रकार सर्वांगीण विकास करने में कारगर सिद्ध हो सकती है ताकि वह युद्ध, हिंसा, अन्याय तथा अत्याचार का प्रबल विरोध करने में सक्षम हो और ऐसे समाज का निर्माण कर सके, जहां वह अन्य लोगों के साथ शांति और सद्भाव से रह सके। उन्होंने ऐसी शिक्षा प्रणाली पर ध्यान केंद्रित किया, जिसके अंतर्गत विद्यार्थी के शारीरिक विकास के साथ साथ मन–मस्तिष्क का भी भरपूर विकास हो, ताकि उसका व्यक्तित्व इस प्रकार निखरे कि वह स्वभाव से शांति प्रेमी हो। बापू का विश्वास था कि शिक्षा का किसी भी समाज के सामाजिक–आर्थिक विकास से गहरा अंतर्संबंध है। उन्होंने मौलिक शिक्षा की ऐसी योजना की वकालत की, जिसके अंतर्गत रोजगारपरक प्रशिक्षण या कार्य के अनुभव को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया जाए।

डाक विभाग, महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर मिनियेचर शीट तथा चार (4) स्मारक डाक–टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

डाक–टिकट / मिनियेचर शीट / प्रथम दिवस आवरण / : श्री शंख सामंत
विवरणिका / विरूपण कैशे

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे (2), 1500 पैसे, 2500 पैसे
Denomination	:	500 p (2), 1500 p, 2500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	500000 प्रत्येक
Stamps Printed	:	500000 each
मुद्रित मिनियेचर शीट्स	:	110000
Miniature sheets printed	:	110000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00